A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal
http://shodhprerak.blogspot.com

Vol. - III, Issue - 3, July 2013

Chief Editor :
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors :
Reeta Yadav
Pradeep Kumar

ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

Chief Editor:
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors:
Reeta Yadav
Pradeep Kumar

Volume III **Issue 3** **July** **2013**

Published By:
VEER BAHADUR SEVA SANSTHA
LUCKNOW

Printed at:
F/70 South City, Rai Bareilly Road, Lucknow-226025
E-mail: shodhprerak@gmail.com, shodhprerakbbau@gmail.com
Cell NO.: 09415390515, 09450245771, 08960501747

Cite this Volume as S/P, Vol. III, Issue 3, July 2013

SHODH PRERAK *ISSN 2231-413X,* *Vol. No. III,* *Issue 3,* *July 2013*

CONTENTS

- वानस्पतिक एवं रासायनिक रंगों द्वारा वस्त्रों की रंगाई — 1-4
  डॉ. [illegible] राम, एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, दृश्यकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- नैसर्गिक न्याय के नियमों की ऐतिहासिक पदयात्रा : एक विश्लेषण — 5-10
  डॉ. [illegible] कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, विधि संकाय, आगरा कालेज, आगरा
- रामानुज के दर्शन में भक्ति का स्थान एवं वर्तमान मानव समाज में उसकी प्रसांगिकता — 11-12
  डॉ. सच्चिदानन्द प्रसाद, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, आर.आर.एस. कॉलेज, मोकामा
- [illegible]-एक संक्षिप्त परिचय — 13-16
  डॉ. [illegible], वरिष्ठ प्रवक्ता, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय बालिका महाविद्यालय, सेवापुरी, वाराणसी
- सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा — 17-21
  डॉ. [illegible] सिंह, रीडर, शिक्षा संकाय, कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुल्तानपुर. (उ.प्र.)
- भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण के स्वरूप — 22-27
  श्रीमती ईरा सिंह, प्रवक्ता, एस.आर.टी. परिसर, बादशाही थौल, टिहरी गढवाल हेमवती नन्दन बहुगुणा गढवाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय
- [illegible] शिक्षा क्षेत्र में स्वतन्त्रता के पूर्व एवं बाद में सूचना एवं संचार की अवधारणा — 28-33
  डॉ. भावना जायसवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर, वूमेन्स स्टडीज, लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ
- हिंदी में संज्ञा-संज्ञा संबंध और कंप्यूटर में ज्ञान-निरूपण — 34-38
  [illegible] प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, भाषा प्रौद्योगिकी, म.गा.अ.हिं.वि.वि., वर्धा
- शिक्षा का विकास : केन्द्र व राज्य की भूमिका एक ऐतिहासिक व वर्त्तमान परिस्थितिक दृष्टिकोण — 39-41
  नेयाज अहमद, UGC (NET) Education
- आचार्य शंकर एवं ब्रह्मानन्द तीर्थ की दृष्टि में अध्यास निरूपण — 42-44
  दिव्या राय, शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- भाषिक भूमंडलीकरण और भाषिक साम्राज्यवाद — 45-47
  ओमप्रकाश प्रजापति, पी-एच.डी, भाषा प्रौद्योगिकी, म.गा.अ.हिं.वि.वि. वर्धा
- बौद्ध धर्म का उद्भव और विकास — 48-53
  [illegible] सिंह, शोध छात्रा, प्राचीन इतिहास विभाग, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ.प्र.)
- गुप्तकालीन अभिलेखों में भूमिकर — 54-58
  [illegible] राय, शोध छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- [illegible] राजनीति के विकास में राजनीतिक संगठनो की भूमिका — 59-63
  [illegible] कुमार, शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- मध्य प्रदेश के अमरपाटन विधानसभा निर्वाचन 2008 में विभिन्न राजनैतिक दलों का निष्पादन — 64-68
  [illegible] कुमार शुक्ला, शोध छात्र-राजनीति विज्ञान, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवां (म.प्र.)

– 269.
1956, पृ. 17–18.

भाषिक भूमंडलीकरण और भाषिक साम्राज्यवाद

ओमप्रकाश प्रजापति *

भाषिक भूमंडलीकरण से अभिप्राय विश्व समाज में भाषा की विभिन्न भूमिकाओं का विस्तार है क्योंकि राष्ट्र वैश्विक बाजार की स्थापना के लिए एक दूसरे से मिलते हैं और आर्थिक पुनर्गठन के लिए एक दूसरे को सहयोग देते हैं। इस दृष्टि से भाषा वैश्विक स्तर पर संपर्क भाषा के रूप में उभरती है, जिसमें ▬▬ओं की कोशपरक और अर्थपरक व्यवस्था में परिवर्तन होता है। यह स्वाभाविक है कि मानव–भाषाओं में परिवर्तन होता है। उनकी नई शब्दावली का विकास होता है और उसमें अर्थपरक तथा वाक्यपरक परिवर्तन होते रहते हैं। इसका कारण भाषाओं के बीच परस्पर आदान–प्रदान होना है, जब समुदाय एक साथ रहकर अपने भावों, विचारों, का आदान–प्रदान करतें हैं। जिस प्रकार यह आदान–प्रदान भारत में बहुसांस्कृतिक समुदायों में होता है उसी प्रकार आज की वैश्विक संचार व्यवस्था के युग में विभिन्न समुदायों के बीच भाषा का जो आदान प्रदान होता है वह एक नया रूप लेकर आता है। विभिन्न भाषा भाषी लोगों में कोई मातृभाषा या प्रथम भाषा, द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है तो भाषिक भूमंडलीकरण की स्थिति ▬▬ने लगती है। इस भाषा में अन्य भाषाओं से कई आगत शब्द और अभिव्यक्तियाँ समाहित होने लगती हैं। इस प्रकार भाषिक भूमंडलीकरण की प्रक्रिया विभिन्न भाषिक अभिव्यक्तियों का आदान –प्रदान है जो अपनी ▬▬वली और अभिव्यक्तियों के कारण सर्वाधिक विशिष्ठ रूप धारण कर लेती है। इस दृष्टि से आज अंग्रेजी ▬▬ सर्वाधिक रूपों में प्रयुक्त होती है। इसी भाषिक रूप को भाषाविद भाषिक भूमंडलीकरण की संज्ञा देते हैं।

प्रश्न उठता है कि भूमंडलीकृत भाषा और साम्राज्यवादी भाषा में क्या अंतर है? वास्तव में ▬▬वादी भाषा साम्राज्यवादी विचारधारा के सशक्तिकरण से निकला है। भूमंडलीकृत भाषा की संकल्पना ▬▬द के सिद्धांत से उभरी है, जिसके अंतर्गत अधिकतर देश बिना किसी संघर्ष और विवाद के विश्व ▬▬ में अपना भाषिक और सांस्कृतिक स्थान स्थापित करने के आकांक्षी हैं। भूमंडलीकृत समाज सामाजिक, ▬▬ स्तरों, नृजातीय और धार्मिक समूहों और कुछ मूल्यों को प्रभुसत्ता की व्यवस्था के रूप में मानता है। ▬▬ चाहता है इसमें समान हित के सूमहों के नैतिक निरपेक्ष परिप्रेक्ष्य में हर व्यक्ति भाग लें। अंतरराष्ट्रीय ▬▬ प्रभुतासंपन्न का देश संयुक्त राष्ट्र संघ में अपने प्रतिनिधित्व के अधिकार के लिए संघर्ष कर रहा है, ▬▬ बहुलवाद के अंतरराष्ट्रीय विचारधारा के लिय औचित्यपूर्ण है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के काल में ▬▬ई लहर उठी, उसने भाषा के प्रति नया दृष्टिकोण पैदा किया। इस में उदारवादी विचारधारा की अंतर ▬▬ मिलती है। और यह भाषिक साम्राज्यवाद की पूर्व स्थितियों की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को समान स्तर ▬▬ नहीं चाहती है। इसी बात को ध्यान में रखकर अब हम साम्राज्यवादी समाज और वर्तमान ▬▬ समाज के बीच के अंतर को पहचान सकते हैं।

भाषिक साम्राज्यवाद और भाषिक भूमंडलीकरण के बीच जो अंतर है वह अधिकतर भाषिक मूल्यों पर ▬▬ है। भाषिक साम्राज्यवाद एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसमें एक भाषा का दूसरी भाषा पर वैचारिक ▬▬ हैं, भाषिक भूमंडलीकृत संचारपरक जाल है। दूसरे शब्दों में भूमंडलीकृत संचार मूल्य को धारण ▬▬ किसी विशेष भाषा का उद्भव और उसकी स्वीकृति है। वर्तमान स्थिति में भाषिक भूमंडलीकरण ▬▬ के उपकरण के रूप में नहीं उभर रहा है, बल्कि विश्व समाज के लिए यह भाषा की भूमिका ▬▬ है क्योंकि भूमंडलीकृत बाजार स्थापित करने के लिए राष्ट्र एक दूसरे से मिल रहे हैं और ▬▬ पुनर्निर्माण के लिए एक दूसरे को सहयोग दे रहे हैं। भाषा का भूमंडलीकरण एकीकृत समाज की ▬▬ के रूप में उभर रहा है और इसकी सफलता समाज में उभरते हुए समझौतावादी व्यवहार का ▬▬ है।

---

* ▬▬ प्रौद्योगिकी, म.गा.अ.हिं.वि.वि. वर्धा

भाषिक भूमंडलीकरण की प्रक्रिया हमारे लिए भूलावे और भ्रम की स्थिति तब तक बनी रहेगी ज तक हम भाषिक साम्राज्यवाद और भाषिक भूमंडलीकरण के प्रादुर्भाव में सहायक ऐतिहासिक प्रक्रिया को सम नहीं लेते।

भाषिक साम्राज्यवाद साम्राज्यवाद की उपज है। इसमें साम्राज्यवादी प्रवृतियाँ अपने को सर्वश्रे घोषित करती है और शासित की अभिव्यक्ति को अपनी अभिव्यक्ति से श्रेष्ठ नहीं मानती है। वास्तव शासकों की भाषा एक दुर्भाग्यपूर्ण विलक्षण है क्योंकि शासक की भाषा राजनीतिक साजिश और हथकंडों अपना विशिष्ट रूप धारण कर लेती है। आज के युग में साम्राज्य या उपनिवेशवाद समाप्त हो चुका इसलिए भाषिक उपनिवेशवाद अथवा साम्राज्यवाद की समाप्ति मानी जा सकती है। भाषिक भूमंडलीकरण नई धारा में बाजारवादी यर्थाथ और अंतरराष्ट्रीयता के गुण समाहित हैं। इस नई धारा में व्यक्ति सामाजिक, और बाजारी स्तरों पर द्वंद्व से अधिक सहकारी, सरोकारी और पारस्परिक योगदान पैदा करने क्षमता पैदा हो रही है और इसी कारण ब्रहुभाषिक कौशल में अत्यंत वृद्धि हुई है।

भाषिक भूमंडलीकरण और भाषिक साम्राज्यवाद में अंतर समझने के लिए साम्राज्यवाद की प्रवृत्ति को समझना आवश्यक है। भाषिक भूमंडलीकरण की प्रक्रिया विभिन्नताओं के संयोजन से परिपूर्ण है। इस में भाषिक विविधता संजोए हुए विश्व बाजार में घुसने के लिए स्वच्छंदता सामने आई है। भूमंडलीकरण प्रक्रिया ने नृजातीय समुदाय तथा धार्मिक संकल्पनाओं की समरसता में अधिक आस्था होती है, जि अपेक्षाएँ होते हुए भी विश्व उदारवादी बनता जा रहा है। अब हित का मामला किसी एक से नहीं जुड़ा गया बल्कि उन सभी लोगों से प्रभावित हो रहा है, जिसमें थोड़ा बहुत सरोकारी संबंध है।

भाषिक साम्राज्यवाद और भाषिक भूमंडलीकरण का अंतर भाषिक मूल्यों के आधार पर समझा सकता है। एक भाषा का दूसरी भाषा पर वैचारिकी अधिकार का महत्व है, जबकि दूसरे में संचार नेटवर्किंग स्थापना का संकेत है। आज के बदलते वातावरण में भाषिक भूमंडलीकरण की प्रक्रिया श प्रदर्शन के इर्द–गिर्द घूमने वाली व्यवस्था का पर्याय नहीं है बल्कि विश्वस्तरीय पटल पर भाषा के संचार मूल्यों का विस्तार है। यह विस्तार चार कारणों से हुआ है। भूमंडलीकृत बाजार की भागीदारी में आतु दूसरे से मिलने की इच्छाशक्ति, आर्थिक निर्माण में सहयोग की भावना, दूसरों के प्रति सम्मान की भावना

भाषिक साम्राज्यवाद दूसरों पर अपना दबदबा स्थापित करने का प्रयास है, जिसमें नैतिक मान्य दब जाती हैं। भाषिक भूमंडलीकरण सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में अ मुखर होने का अवसर देता है क्योंकि नई और दबी जुबानों को मुख्य धारा में सम्मिलित करना अंतरर प्रतिबद्धता का विषय बन गया है। भूमंडलीकरण के इस युग में जोड़तोड़ की अपेक्षा समझौतावादी अधिक है और इस प्रक्रिया के माध्यम से शक्तिशाली और शक्तिहीन समाजों को एक साथ लाया जा स है। विकसित और अविकसित देशों के बीच व्याप्त खाई को पाटने में यह प्रक्रिया काफी प्रभावकारी सि सकती है। आर्थिक उदारवाद की प्रक्रिया से सामाजिक नृजातीय और धार्मिक विषमताओं, धार्मिक कट्ट रंगभेद और जातिभेद को दूर करने में सहायता मिल रही है। अगर भाषिक भूमंडलीकरण सामा प्रतिनिधित्व सामुदायिक निर्णय, भाषिक मानवाधिकार के संरक्षण और संचार की स्वतंत्रता से प्रेरित दूसरी ओर भाषिक साम्राज्यवाद भाषा के राजनीतिक मूल्यों का विस्तार, चयन की बाध्यता, राजनीतिक अधिकारता, पश्चिमीकरण, एकलवादी प्रतिनिधित्व, बुर्जुआवादी, भाषिक मानवाधिकार आदि का हनन संचार वंचिता की आपेक्षिक उपस्थिति का प्रतीक है। अब प्रश्न उठता है कि साम्राज्यवादी अंग्रेजी भूमंडलीकृत अंग्रेजी में अंतर क्या है। साम्राज्यवादी अंग्रेजी कभी–कभी साम्राज्यवादियों की भाषा हुआ थी, जो उपनिवेशिक अपनी शक्ति का प्रयोग के लिए किया करते थे भूमंडलीकृत अंग्रेजी नई संचा आर्थिक और सांस्थानिक मूल्यों की पहचान है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी को छोड़कर सभी साम्राज्यवादी भाषाएँ भूमंडलीकृत भाषा नहीं हो पाई। फ्रांसीसी भी एक जमाने में एक उपनिवेशि साम्राज्यवादी भाषा थी। उस के संबंध में फिशमेन (1977) का कथन है कि अधिकतर भाषाओं ने उपनि सत्ता के बाद अपना महत्व बनाए नहीं रखा, जबकि अंग्रेजी आज भी अपने महत्व को बनाए हुए हैं। अब श्वेत व्यक्तियों या अंग्रेजों की भाषा पूरे अफ्रीका, अमेरिका, एशिया में अपना प्रभुत्व जमाए हुए है साम्राज्यवादी अंग्रेजी ने विकासशील देशों में विशेष प्रकार के कामकाजी बाबू पैदा किए जो अपने अ

श्रेष्ठ एवं प्रतिष्ठित मानते थे। यही कारण है आज भी अंग्रेजी व्यक्तिवादी प्रतिष्ठा एवं सामाजिक प्रतिष्ठा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है। आज की अंग्रेजी मुख्यतः उपभोक्तवाद एवं उपयोगितावाद के सिद्धांत पर टिकी हुई है। अमेरिकन इंग्लिश, अफ्रीकन इंग्लिश, इंडियन इंग्लिश आदि अंग्रेजी के ये सभी रूप आज उतने साम्राज्यवादी उपनिवेशवादी नहीं जितने कि सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि कारणों से है। यह अंतरराष्ट्रीय संवाद का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है।

दूसरी ओर हिंदी कभी साम्राज्यवादी भाषा नहीं रही है। यह जन सामान्य की भाषा के रूप में उभरी है। यद्यपि इसके भूमंडलीकृत भाषा के रूप में उभरने में कई बाधाएँ आई हैं लेकिन फिर भी आज यह अंग्रेजी के मुकाबले में भूमंडलीकृत भाषा का रूप धारण कर रही है। यह जनपद और क्षेत्रीय परिधि से निकल कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आ गई है। विश्व में सर्वाधिक बोलने वाली प्रथम तीन भाषाओं अर्थात अंग्रेजी, चीनी, हिंदी में भी इसका स्थान है। नोटियाल ने अपने अनुसंधानात्मक सर्वेक्षण से हिंदी को विश्व की सर्वाधिक बोलने वाली भाषा माना है। हिंदी को यह स्थान साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी सत्ता से प्राप्त नहीं हुआ वरन् उपयोगितावाद और उपभोक्तावाद की दृष्टि से प्राप्त हुआ है। प्रारंभ से ही यह भाषा जन जन की भाषा रही है और आज भी अपने सर्वश्रेष्ठ साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य, जनसंचार, प्रशासन आदि में प्राप्त किया है, किंतु बाबू लोग और साहब लोग इसे स्वीकार करने में सकुचा रहे हैं। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी यदि इसे भी भूमंडलीकृत भाषा कहा जाए।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि बहुभाषी देशों और राज्यों में भाषिक बाजार के मापदंडों का जटिल होने का कारण माँग व पूर्ति की सीमाओं का बहुमुखी होना है। बहुभाषी राष्ट्रों में आवश्यकताएँ बहुस्तरीय होती है। इसलिए संतुलन की स्थिति बनाए रखने के लिए सामाजिक व्यापार की शक्ति के तीन विकल्प कार्य करते हैं– 1. मातृभाषा/प्रथम भाषा, 2. राष्ट्र की राजभाषा, 3. अंतरराष्ट्रीय भाषा।

इस स्थिति को देखते हुए भारतीय बाजार के अनुसार भाषा नियोजन की आवश्यकता पड़ती है। इसमें भाषा चयन करना पड़ता है और फिर विकल्प देखने पड़ते हैं। यहाँ पर मात्र तुष्टिकरण नहीं है बल्कि जनता की माँग है। आज का बाजारवादी यथार्थ दमनकारी नहीं है, क्योंकि पश्चिम का वर्चस्व अवसान की ओर जा रहा है और राजनैतिक व्यवस्था भी सामने नहीं आ रही है। इसलिए भाषा की संप्रेषणीयता के मूल्यों में एक नया रूप उभर कर आया है, जिससे अस्मिता को ध्यान में रखा जाता है। कुछ विद्वानों ने भारतीय बहुभाषिकता में अंग्रेजी के वर्चस्व कों एक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोणों से उचित माना है, लेकिन भारतीय भाषा अपना स्थान बड़ी तेजी से बना रही है। भूमंडलीकरण के दौर में विश्व स्तर पर भारत को एक महाशक्ति के रूप में जो पहचान मिली है उसमें हिंदी की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। विश्व में अधिकतर व्यापार केंद्र, विशेषकर एशियाई देशों, में द्विभाषी एवं त्रिभाषी चौनल काम कर रहे हैं। इन चैनलों में किसी एक भाषा का एकाधिकार नहीं है। इसके अतिरिक्त सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भूमंडलीकरण का क्षेत्र जितना बड़ा है उतना ही स्थानीकरण का भी। इससे क्षेत्रीय एवं स्थानीय, सामाजिक, अस्मिताएँ सामने आ रही हैं। अंततः कहा जा सकता है कि विकासशील देशों में विशेषकर भारत में हिंदी इन सभी को वहन करने में सक्षम हो रही है।